International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-08-2022, Accepted: 29-08-2022, Published: 15-09-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 67-68

राम काव्य परम्परा में 'राम की शक्ति पूजा': समकालीनता एवं प्रासंगिता

डॉ. रजनी कुमारी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय बिलावर, जम्मू, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र राम काव्य परम्परा में 'राम की शक्ति पूजा' कविता जो कि महाकवि शनिरालाश द्वारा रचित है में समकालीनता एवं प्रासंगिता की खोज पर आधारित है। आलोच्य कविता में राम का रावण से द्वंद्व ईश्वरीय नहीं है यह आज के प्रत्येक मानव का संघर्ष है। आज जो व्यक्ति सत्य के लिए लड़ता है उसका साथ देने वाले बहुत कम लोग होते हैं और उसी को विपत्तियों का भी सामना करना पड़ता है। कवि निराला का जीवन भी अपराजय भाव के कारण संघर्षरत रहा है । यही भाव निराला प्रत्येक व्यक्ति के मन में भी उजागर करते हैं।

मूल शब्दः द्वंद्व, सशय, मौलिक , समकालीन, तत्कालीन, नैतिकता, आध्यात्मिकता

भारतीय संस्कृति एवं जन मानस को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला सन्दर्भ राम कथा ही है। राम कथा का प्रत्येक पहलू एवं प्रसंग किसी–न–किसी रूप में समाज की आस्था एवं सही–गलत के निर्णय से सीधा संबंधित है। यही कारण है कि राम–कथा को आधार बनाकर अलग–अलग तरीके से विभिन्न प्रसंगों एवं पहलुओं को साहित्यकार आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक रचते चले आए हैं। मूल कथा तो एक ही रही है किन्तु समय और परिस्थितियों के अनुकूल लेखकीय शक्ति ने मौलिक अद्भभावनाएँ कर उसे नवीन रूप में प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है ।

आधुनिक युग में रचित 'राम की शक्ति पूजा महाकवि निराला की उसी काव्य शक्ति एवं अपने समय की व्यापक समझ का ही परिणाम है। विषय–वस्तु एवं कला दोनों ही दृष्टियों से यह काव्य श्रेष्ठ साहित्य की श्रेणी में आता है और साथ ही नवीन प्रयोग की विलक्षणता इसे अन्य काव्यों से अलग कर मौलिक रूप प्रदान करती है।

निराला द्वारा 1936 ई. में रचित यह कविता केवल राम कथा की सामान्य प्रस्तुति मात्र नहीं है अपितु राम–रावण के युद्ध के माध्यम से समाज में सत्य और असत्य वर्ग के बीच के युद्ध की स्थितियों और उन स्थितियों में से उपजने वाली भीषण परिस्थितियों और फिर उन परिस्थितियों में सत्य के लिए लड़ने वाले वर्ग का मानसिक अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त हुआ है । 'राम की शक्ति पूजा' काव्य में राम की मनः स्थिति देखिए,

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर संशय
रह–रह उठता जग जीवन में रावण–जय–भय,... असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार–हार ।""[1]

यहां राम कोई ईश्वर नहीं है, आम व्यक्ति है। उसे अपनी हार का संशय अन्दर तक झकझोर कर रख देता है क्योंकि असत्य के लिए लड़ने वाले उसके शत्रु रावण का साथ स्वयं देवी माँ दे रही थी। यह पीड़ा उसे अन्दर तक तोड़कर रख देती है। आलोच्य काव्य में राम विभीषण से स्पष्ट कहते हैं–

"मित्रवर, विजय होगी न समर
यह नहीं रहा नर–वानर का राक्षस से रण,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण
अन्याय जिधर, है उधर शक्ति ।"[2]

यह स्थिति पूरी तरह समकालीन सन्दर्भों से जुड़ती है। आज जो व्यक्ति सत्य के लिए लड़ता है उसका साथ देने वाले बहुत कम लोग होते हैं और उसी को विपत्तियों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसे में दुराचारी व्यक्ति अट्टहास करता हुआ सदाचारी को मात पे मात देता चला जाता है। यहां तक कि सभी शक्तियाँ भी उसी का साथ देती हैं क्योंकि वह सभी को खरीद लेने की क्षमता रखता है। 'राम की शक्ति पूजा' में निराशा से उद्वेलित राम का निम्न कथन अन्तर्द्वन्द्व से घिरे आधुनिक मानव का ही है,

"धिक जीवन, जो पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।"[3]

निराला ने राम के व्यक्तित्व में निराशा, विषाद और संशय आदि मनः स्थितियों को उत्पन्न कर उसे सहज मानवीय तथा समकालीन युगीन धरातल पर तो प्रतिष्ठित किया ही, साथ ही ऐसे विषादपूर्ण क्षणों में उसके मन में प्रणय–भावनाओं को जगाकर कर्म भूमि में प्रवृत होने के लिए शक्ति का संचार भी किया। यह तथ्य बहुत ही स्वाभाविक लगता है क्योंकि निराला समाज को इस सत्य से जोड़ना चाहते हैं कि स्त्री ही समाज की प्रेरणा शक्ति है । 'राम की शक्ति पूजा' में सीता की स्मृति मात्र राम के लिए आशा की नई किरण बनती है,

"सिहरा तन, क्षण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भग को पुनवार्र ज्यों उठा हस्त.....
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आई भर ।"[4]

'राम की शक्ति पूजा' काव्य की विशिष्टता इस बात में है कि यह एक प्रतीकात्मक काव्य है। राम–रावण के युद्ध के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों का ही चित्रण हुआ है। इस काव्य की रचना जिस काल में हुई उस समय देश पराधीनता का दंश झेल रहा था। यहां सीता बंधिनी रूप में भारत भूमि का ही प्रतीक है और राम भारत की स्वतंत्रता तथा अंग्रेज़ी सरकार के अत्याचारों और अन्याय के विरूद्ध संघर्षरत्त मानव के रूप में चित्रित है। रावण अपनी क्रूरताओं, अनीतियों एवं छल के कारण अंग्रेज़ी सरकार का प्रतीक बनकर काव्य में उपस्थित है। रावण की निर्दयता काव्य में निम्न शब्दों में व्यक्त हुई है,

"रावण, रावण, लम्पट, खल कल्मष–गताचार,

जिसने हित कहते किया मुझे पाद प्रहार,
बैठा उपवन में देखा दुख सीता को फिर"[5]

ऐसी स्थिति में जबकि राम सत्य के पक्ष के लिए लड़ने का संकल्प लिए हुए हैं तो शक्ति सम्पन्नता की प्रतीक देवी माँ को राम का साथ देना चाहिए था किन्तु रावण ने उसे भी प्रसन्न करके अपने पक्ष में कर लिया है। यह स्थिति पूर्णतः समकालीन एवं प्रासंगिक है क्योंकि देश की स्वतंत्रता के संघर्ष के समय भी और स्वतंत्रता के बाद आज भी शक्ति उसी के पक्ष में है जो अन्यायी है, जो छल से अपना हित साधता आ रहा है।

"आया न समझ में यह दैवी–विधान
रावण अध मरत भी अपना; मैं हुआ अमर,
यह रहा शक्ति का खेल समर शंकर, शंकर ।""[6]

शक्ति के इस आश्चर्यपूर्ण विधान के प्रति राम की जिज्ञासा सामान्य मानव की जिज्ञासा बनकर सामने आई है, जो पूरी तरह युक्ति संगत है। ऐसे में गाँधीवादी अहिंसात्मक युद्ध राम के बाणों की भांति विफल सिद्ध हो रहे हैं। परन्तु निराला कभी भी विषम परिस्थितियों में हार मानने के पक्षधर नहीं रहे। शक्ति का संचय कर अंतिम क्षणों तक चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना निराला के व्यक्तित्व की मुख्य विशिष्टता रही है। इसी कारण उन्होंने राम के आत्मविश्वास को डिगने से बचाकर आने वाले प्रत्येक समय के व्यक्तियों को परिस्थितियों के आगे हार न मानने का सन्देश दिया है। तभी तो वह जाम्वान के मुख से कहलवाते हैं,

"विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम बनो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर"[7]

निराला का यह मानना था कि दृढ़ निश्चय और शक्ति की मौलिक अराधना ही व्यक्ति को विजय दिला सकती है। अनीति के साथ नीति से नहीं लड़ा जा सकता, उसके लिए व्यक्ति को एकाग्रचित होकर मौलिकता से शक्ति को प्रसन्न करना होगा। व्यक्ति के पास न्याय, सत्य, नैतिकता जैसे चाहे कितने ही सम्बल क्यों न हों पर किसी भी युग में पुरुषार्थ के साथ–साथ शक्ति संचय (भौतिक एवं आध्यात्मिक) के अभाव में विजय प्राप्त करना तो दूर सामान्य मूल्यों की भी रक्षा नहीं की जा सकती ।
'राम की शक्ति पूजा' में राम भी हर तरफ से निराश होकर शक्ति की मौलिक आराधना का निर्णय लेते हैं। परन्तु वहां भी शक्ति द्वारा उनके धैर्य और दृढ़ निश्चय की परीक्षा ली जाती है। पूजा के अंतिम फूल को देवी द्वारा चुरा लिए जाने पर कुछ पल के लिए राम विचलित अवश्य हो जाते हैं, जो कि मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है किन्तु माँ द्वारा कमल नयन कहने की बात याद आते ही प्रसन्नता से भर उठते हैं। क्योंकि राम हर तरह की बाधा को पार करने का दृढ़ संकल्प कर चुके थे और विजयी होने के महत्व को भी भली–भांति समझ चुके थे। तभी तो वह अपनी आँख को कमल कहकर विधि को पूर्ण करने के लिए उसकी आहुति देने का उद्धत्त हो उठते हैं। राम की इसी दृढ़ता से प्रभावित होकर देवी उसे विजयी होने का वरदान देकर उसके बदन में लीन हो जाती है।

"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म–धन धन्य राम! कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त धाम ।... होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन । कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।""[8]

राम के बदन में शक्ति का लीन होना इस तथ्य की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि अब राम को शक्ति से कोई अलग नहीं कर सकता यानि कि
उसकी विजय निश्चित है। राम जैसी दृढ़ प्रतिज्ञा प्रत्येक युग के मानव को सत्य की जीत के लिए प्रेरित करती है। यहीं पर इस काव्य की प्रासंगिता सिद्ध हो जाती है, जो सदैव बनी रहेगी ।
कवि निराला का स्वयं का जीवन भी अपराजय भाव के कारण संघर्षरत रहा। इसी कारण उनका राम भी अपराजय ही रहा और यही भाव निराला प्रत्येक व्यक्ति के मन में भी उजागर करते हैं। अंत में प्रो. देशराजसिंह भाटी के शब्दों में कहूँ तो, "युगों–युगों से विषण्ण एवं शोषित–पीड़ित मानवता को समतुल्य शक्ति का संचयन करके अन्याय, अत्याचार एवं उत्पीड़न का डटकर मुकाबिला करने की चिर अमर प्रेरणा दी है। इसी प्रेरणामयी अनुभूति के कारण ही छायवादी पर्यावरण में रची गई यह गाद्यात्मक कृति अमरत्व का अलक्षित आवरण ओढ़ने में समर्थ हो सकी है ।"[8]

संदर्भ ग्रन्थ

1. निराला की कविताएँ और काव्य भाषा; रेखा खरे; लोक भारतीय प्रकाशन,
2. इलाहाबाद, 1976; पृ. 126
3. वही, पृ. 137
4. वही, पृ. 128
5. निराला और उनकी राम की शक्तिपूजा; प्रो. देवराजसिंह भाटी; अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1974; पृ. 167 5 वही, पृ. 174
6. वही, पृ. 175
7. वही, पृ. 103
8. वही, पृ. 171